पाठ 1 : साखी

कक्षा 10 · हिंदी · CBSE

पुस्तक: स्पर्श – भाग 2

कवि: कबीर

CBSE-ALIGNED SAMPLE ANSWERS

Aurum Academy Global

विद्यार्थी का नाम: _____

https://aurumacademyglobal.com/

Quick Notes

अध्याय परिचय

यह संकलन कक्षा 10 हिंदी की पुस्तक 'स्पर्श – भाग 2' के पाठ 'साखी' के दिए गए प्रश्न-अभ्यास और भाषा-अध्ययन पर आधारित CBSE-अनुकूल नमूना उत्तर प्रस्तुत करता है। मूल अध्याय में कबीर की साखियों के माध्यम से मधुर वाणी, आत्मज्ञान, ईश्वर की सर्वव्यापकता, आत्मशुद्धि और सच्चे ज्ञान जैसे विचार सामने आते हैं।

उत्तर इस प्रकार लिखे गए हैं कि विद्यार्थी परीक्षा में अपने शब्दों में संक्षिप्त, स्पष्ट और विषयानुकूल उत्तर लिख सके।

महत्त्वपूर्ण लेखन-सूत्र

- उत्तर में प्रश्न के मुख्य शब्दों को ध्यान में रखें।
- भाव स्पष्ट करते समय साखी के केंद्रीय संदेश को अवश्य लिखें।
- लंबे उत्तरों में विचार + कारण + निष्कर्ष का क्रम रखें।
- भाषा सरल, शुद्ध और व्याकरणसम्मत रखें।

Quick Notes

परियोजना कार्य — नमूना सामग्री

नीचे दिए गए बिंदुओं को विद्यार्थी चार्ट, फाइल या भित्ति-पत्रिका में व्यवस्थित कर सकता है।

1. मीठी वाणी / बोली से संबंधित दोहे

- मधुर वाणी से मनुष्य के मन में प्रेम और शांति का भाव बढ़ता है।
- वाणी ऐसी होनी चाहिए जो स्वयं को भी शीतलता दे और दूसरों को भी सुख पहुँचाए।
- कठोर शब्दों से बचकर विनम्र और कल्याणकारी भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

2. ईश्वर-प्रेम से संबंधित दोहों के लिए प्रस्तुति-बिंदु

- ईश्वर को बाहरी आडंबरों की अपेक्षा सच्चे प्रेम और आत्मज्ञान से समझा जा सकता है।
- ईश्वर प्रत्येक प्राणी में विद्यमान है; इसलिए मनुष्य को अपने भीतर भी देखना चाहिए।
- अहंकार का त्याग और मन की निर्मलता ईश्वर की अनुभूति का मार्ग है।

3. कक्षा में अंत्याक्षरी के लिए साखियों का उपयोग

विद्यार्थी कबीर की साखियों को याद करके उनके अंतिम शब्द या ध्वनि के आधार पर अगली साखी बोल सकता है। गतिविधि का उद्देश्य साखियों को याद करना, उच्चारण सुधारना और उनके अर्थ को समझना है।

Quick Notes

शब्दार्थ एवं टिप्पणियाँ — त्वरित पुनरावृत्ति

शब्द	अर्थ
बाँणी	बोली / वाणी
आपाँ	अहंकार
कुंडलि	नाभि
घटि घटि	घट-घट में / कण-कण में
भुवंगम	भुजंग / साँप
बौरा	पागल / अत्यंत व्याकुल
नेड़ा	निकट
आँगणि	आँगन
साबण	साबुन
अक्षिर	अक्षर
पीव	प्रिय
मुड़ा	जलती हुई लकड़ी

Quick Notes

परीक्षा-उपयोगी संक्षिप्त पुनरावृत्ति

मुख्य संदेश

कबीर बाहरी आडंबरों के बजाय आत्मज्ञान, ईश्वर-प्रेम, विनम्रता और मन की निर्मलता को महत्त्व देते हैं।

मधुर वाणी

ऐसी वाणी बोलनी चाहिए जो दूसरों को सुख और स्वयं को शांति दे।

ज्ञान का दीपक

आत्मज्ञान अज्ञान और अहंकार के अँधकार को दूर करता है।

ईश्वर की सर्वव्यापकता

ईश्वर प्रत्येक प्राणी के भीतर विद्यमान है; मनुष्य को उसे बाहर खोजने के बजाय अपने भीतर पहचानना चाहिए।

सोना और जागना

सोना अज्ञान/मोह का और जागना ज्ञान/सत्यबोध का प्रतीक है।

निंदा का महत्त्व

आलोचना से अपनी कमियाँ पहचानकर उन्हें सुधारने का अवसर मिलता है।

सच्चा पंडित

सच्चा ज्ञान पुस्तकीय ज्ञान की मात्रा से नहीं, बल्कि प्रेम, सत्य और जीवन के सार को समझने से मिलता है।

भाषा

कबीर की भाषा सरल, लोकप्रचलित, मिश्रित और प्रभावशाली है; इसे सधुक्कड़ी/पंचमेल खिचड़ी कहा जाता है।

Answer Key

उत्तर-कुंजी — CBSE-ALIGNED SAMPLE ANSWERS

नीचे उत्तर उसी पाठ-अभ्यास क्रम में दिए गए हैं।

1. मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है?

उत्तर मीठी और मधुर वाणी सुनने वाले के मन को प्रसन्न करती है तथा उसे सुख देती है। ऐसी वाणी बोलने वाले के मन में भी शांति, संतोष और विनम्रता उत्पन्न करती है। इसलिए उसका अपना मन और तन भी शीतल रहता है।

2. दीपक दिखाई देने पर अँधियारा कैसे मिट जाता है? साखी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर दीपक प्रकाश का प्रतीक है और अँधियारा अज्ञान का। जिस प्रकार दीपक का प्रकाश अँधेरे को दूर कर देता है, उसी प्रकार आत्मज्ञान और ईश्वर के सच्चे ज्ञान का प्रकाश मन के अज्ञान, भ्रम और अहंकार को दूर कर देता है।

3. ईश्वर कण-कण में व्याप्त है, पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते?

उत्तर ईश्वर हमारे भीतर और संसार के प्रत्येक कण में विद्यमान है, फिर भी अज्ञान, अहंकार, मोह और बाहरी आडंबरों के कारण हम उसे पहचान नहीं पाते। जब मन निर्मल होकर भीतर की ओर देखता है, तब ईश्वर की अनुभूति संभव होती है।

4. संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन? यहाँ 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतीक हैं? इसका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर कबीर के अनुसार संसार में वह व्यक्ति सुखी है जो अज्ञान और सांसारिक मोह में सोया हुआ है, जबकि कबीर स्वयं जागरूक होकर संसार के दुख और सत्य को देखते हैं, इसलिए वे दुखी हैं। यहाँ 'सोना' अज्ञान, मोह और असजगता का तथा 'जागना' ज्ञान, जागरूकता और सत्य की अनुभूति का प्रतीक है।

5. अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है?

उत्तर कबीर ने आत्मशुद्धि के लिए अपने दोषों को पहचानने और उन्हें दूर करने का उपाय सुझाया है। इसके लिए आलोचना करने वाले व्यक्ति को भी अपने पास रखना चाहिए, क्योंकि उसकी बातों से हमें अपनी कमियाँ दिखाई देती हैं और हम उन्हें सुधारकर अपने स्वभाव को निर्मल बना सकते हैं।

Answer Key

उत्तर-कुंजी — भाव स्पष्ट कीजिए

1. विरह भुवंगम तन बसे, मंत्र न लागै कोइ। राम बियोगी न जीवै, जीवै तो बौरा होइ।

उत्तर कबीर कहते हैं कि ईश्वर से बिछोह का दुख शरीर में साँप के समान व्याप्त हो जाता है। इस विरह की पीड़ा इतनी तीव्र है कि कोई सामान्य उपाय या मंत्र इसे दूर नहीं कर सकता। जो व्यक्ति राम से वियोग में है, उसका सामान्य जीवन कठिन हो जाता है; यदि वह जीवित रहता भी है तो उसकी स्थिति अत्यंत व्याकुल और अस्थिर हो जाती है।

2. कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माँहि। ऐसे घटि-घटि राम हैं, दुनिया देखै नाँहि।

उत्तर कस्तूरी मृग की नाभि में ही होती है, लेकिन वह उसकी सुगंध को बाहर खोजता हुआ जंगल में भटकता रहता है। उसी प्रकार ईश्वर प्रत्येक प्राणी के भीतर विद्यमान है, फिर भी मनुष्य उसे बाहर खोजता है। कबीर मनुष्य को भीतर झाँकने और आत्मज्ञान प्राप्त करने का संदेश देते हैं।

3. जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि। सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि।

उत्तर जब मनुष्य के भीतर अहंकार अर्थात् 'मैं' का भाव रहता है, तब उसे ईश्वर का अनुभव नहीं होता। जब अहंकार समाप्त होकर ईश्वर का ज्ञान प्राप्त होता है, तब अज्ञान का अँधकार मिट जाता है। 'दीपक' यहाँ ज्ञान और आत्मबोध का प्रतीक है।

4. पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोइ। ऐकै अक्षर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ।

उत्तर कबीर पुस्तकीय ज्ञान को ही सच्चा ज्ञान नहीं मानते। बहुत-सी पुस्तकें पढ़ लेने से व्यक्ति वास्तव में ज्ञानी नहीं बन जाता। ईश्वर-प्रेम, सत्य और जीवन के मूल तत्व को समझना ही वास्तविक ज्ञान है। इसलिए जो व्यक्ति प्रेम और सत्य का सार समझ लेता है, वही सच्चा पंडित कहलाता है।

Answer Key

उत्तर-कुंजी — भाषा-अध्ययन एवं योग्यता विस्तार

1. पाठ में आए शब्दों के प्रचलित रूप लिखिए: औरन, माँहि, देख्या, भुवंगम, नेड़ा, आँगणि, साबण, मुआ, पीव, जालौं, तास।

उत्तर औरन – औरों; माँहि – में; देख्या – देखा; भुवंगम – भुजंग/साँप; नेड़ा – निकट; आँगणि – आँगन; साबण – साबुन; मुआ – मरा; पीव – प्रिय; जालौं – जलाऊँ; तास – उसका/उससे।

1. ‘साधु में निंदा सहन करने से विनयशीलता आती है’ तथा ‘व्यक्ति को मीठी व कल्याणकारी वाणी बोलनी चाहिए’–इन विषयों पर चर्चा के लिए मुख्य बिंदु लिखिए।

उत्तर निंदा या आलोचना से हमें अपनी कमियाँ पहचानने का अवसर मिलता है। आलोचना को शांत मन से सुनने पर विनम्रता और आत्मसुधार की भावना विकसित होती है। इसी प्रकार मीठी, संयमित और कल्याणकारी वाणी दूसरों को सुख देती है तथा संबंधों में प्रेम और सम्मान बढ़ाती है। इसलिए बोलने से पहले शब्दों के प्रभाव पर विचार करना चाहिए।

2. कस्तूरी के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए।

उत्तर कस्तूरी एक सुगंधित पदार्थ है, जिसका संबंध कस्तूरी मृग से है। कबीर ने कस्तूरी का उदाहरण देकर यह समझाया है कि जिस प्रकार मृग अपनी नाभि में मौजूद सुगंध को बाहर खोजता है, उसी प्रकार मनुष्य अपने भीतर विद्यमान ईश्वर को बाहर खोजता रहता है।

CBSE SAMPLE-ANSWER NOTE

ये उत्तर अभ्यास और परीक्षा-तैयारी के लिए नमूना उत्तर हैं। विद्यार्थी प्रश्न की माँग के अनुसार उत्तर को अपने शब्दों में भी लिख सकता है।